Modern History Mains Index

01. भारत में ब्रिटिश विस्तार/ British Expansion in India (1757–1857).....9
02. सहायक संधि और विलय का सिद्धांत (Subsidiary Alliance and Doctrine of Lapse) 11
03. भारत में ब्रिटिश शासन का आर्थिक प्रभाव 13
04. सामाजिक-धार्मिक सुधार आंदोलन (Socio-Religious Reform Movements) 14
05. 1857 का विद्रोह (कारण, स्वरूप, नेतृत्व और परिणाम) 16
06. भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस 18
07. कांग्रेस का उदारवादी और उग्रवादी चरण (1885–1917) 21
08. बंगाल विभाजन और स्वदेशी आंदोलन (1905–1911).....23
09. होम रूल आंदोलन (1916–1918) 25
10. मुस्लिम लीग.....27
11. महात्मा गांधी 29
12. खिलाफत आंदोलन 31
13. साइमन आयोग और नेहरू रिपोर्ट.....33
14. गोलमेज सम्मेलन (Round Table Conferences).....35
15. क्रांतिकारी आंदोलन.....37
16. सुभाष चंद्र बोस.....39
17. क्रिप्स मिशन और कैबिनेट मिशन 41
18. भारतीय स्वतंत्रता अधिनियम, 1947 43
19. भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में महिलाओं की भूमिका 45
20. किसान और जनजातीय आंदोलन.....47
21. आधुनिक इतिहास के महत्वपूर्ण व्यक्ति.....49
22. महत्वपूर्ण पुस्तकें (Important Books) 53
23. आधुनिक भारत के प्रमुख समाधि स्थल.....54
24. महत्वपूर्ण घटनाएँ.....57
25. Modern History : Important Questions.....60

01.भारत में ब्रिटिश विस्तार/ British Expansion in India (1757–1857)

परिचय

1757 की **प्लासी की लड़ाई** भारतीय इतिहास में एक युगांतरकारी घटना थी, जिसने भारत में ब्रिटिश साम्राज्य के औपनिवेशिक शासन की नींव रखी। 1764 की **बक्सर की लड़ाई** ने इसे राजनीतिक वैधता दी और बंगाल, बिहार तथा उड़ीसा पर ब्रिटिश नियंत्रण स्थापित हुआ। अगले सौ वर्षों में ब्रिटिशों ने भारत के अधिकांश भाग पर धीरे-धीरे प्रभुत्व स्थापित कर लिया।

कारण

1. मुगल साम्राज्य का पतन: केंद्रीय सत्ता के कमजोर होने से प्रांतीय शक्तियाँ स्वतंत्र हो गईं।
2. भारतीय राज्यों की पारस्परिक प्रतिद्वंद्विता: मराठा, सिख और नवाबों के बीच आपसी संघर्ष से ब्रिटिशों को फायदा हुआ।
3. ब्रिटिश नौसैनिक और सैन्य श्रेष्ठता: बेहतर हथियार, प्रशिक्षण और रणनीति ने उन्हें अन्य यूरोपीय शक्तियों से आगे रखा।
4. राजनैतिक कूटनीति और स्थानीय सहयोग: भारतीय सरदारों और व्यापारियों से सहयोग प्राप्त कर कंपनी ने अपनी पकड़ मजबूत की।

उद्देश्य

ब्रिटिशों का प्रमुख उद्देश्य **व्यापारिक हितों की सुरक्षा** और **भारतीय संसाधनों पर नियंत्रण** था। उन्होंने भारत को यूरोपीय बाजार का उपनिवेश बनाने की दिशा में प्रशासनिक और सैन्य नीतियाँ अपनाईं।

ब्रिटिश विस्तार की प्रमुख अवस्थाएँ (1757–1857)

1. बंगाल में प्रभुत्व (1757–1772)

- प्लासी (1757) की लड़ाई में सिराज-उद-दौला की हार और रॉबर्ट क्लाइव की कूटनीति ने ब्रिटिशों के लिए भारत में सत्ता का द्वार खोल दिया।
- इसके बाद बक्सर की लड़ाई (1764) में मीर कासिम, शुजाउद्दौला और मुगल सम्राट शाह आलम द्वितीय की संयुक्त सेना को हराकर कंपनी ने दीवानी अधिकार (राजस्व संग्रह) प्राप्त किए।
- इससे बंगाल, बिहार और उड़ीसा ब्रिटिश प्रशासन के अधीन आ गए और ब्रिटिश राजनीतिक सत्ता की शुरुआत हुई।

2. मद्रास और दक्षिण भारत में विस्तार (1760–1805)

- कार्नाटक युद्धों (1746–1763) में फ्रांसीसियों को हराकर ब्रिटिशों ने दक्षिण भारत में अपना प्रभुत्व स्थापित किया।
- तीसरे कार्नाटक युद्ध (1760–1763) में विजय के बाद फ्रांसीसी प्रभाव समाप्त हो गया।
- इसके बाद मेसूर के हैदर अली और टीपू सुल्तान के विरुद्ध चार युद्धों (1767–1799) के माध्यम से ब्रिटिशों ने दक्षिण भारत पर पूर्ण अधिकार प्राप्त कर लिया।

3. महाराष्ट्र और उत्तर भारत में विस्तार (1802–1818)

- तीनों मराठा युद्ध (1775–1818) ब्रिटिशों और मराठों के बीच शक्ति-संघर्ष का परिणाम थे।
- पहला युद्ध (1775–1782) असफल रहा, लेकिन दूसरे (1803–1805) और तीसरे (1817–1818) युद्धों में मराठों की हार ने ब्रिटिशों को मध्य भारत और पश्चिम भारत का शासक बना दिया।

4. पंजाब और उत्तर-पश्चिम में विस्तार (1845–1849)

- पहला और दूसरा आंग्ल-सिख युद्ध (1845–1849) पंजाब के विलय में निर्णायक रहे।
- लार्ड डलहौज़ी ने 1849 में महाराजा दलीप सिंह के अधीन सिख साम्राज्य का अंत कर दिया। इससे ब्रिटिश साम्राज्य की सीमा अफगानिस्तान तक पहुँच गई।

5. दक्कन और दक्षिणी विजय (1856 तक) / The Deccan and Southern Conquest (Up to 1856)

- लार्ड डलहौज़ी ने "विलय का सिद्धांत (Doctrine of Lapse)" अपनाकर कई भारतीय रियासतों का अधिग्रहण किया।
- सतारा (1848), झाँसी (1854), नागपुर (1854) और अवध (1856) को इस नीति के तहत ब्रिटिश साम्राज्य में मिला लिया गया।
- यह नीति भारतीय जनमानस में असंतोष का कारण बनी, जिसने आगे चलकर 1857 के विद्रोह को जन्म दिया।

महत्व / Significance

ब्रिटिश शासन ने भारत को **राजनीतिक और प्रशासनिक एकता** प्रदान की, जो बाद में भारतीय राष्ट्रवाद के विकास में सहायक बनी। उन्होंने आधुनिक शिक्षा, डाक, रेल और टेलीग्राफ जैसी संस्थाएँ शुरू कीं, जो एकीकृत भारत की दिशा में कदम थीं।

भारत में प्रभाव

- राजनीतिक: भारतीय शासकों की स्वतंत्रता समाप्त होकर ब्रिटिश सर्वोच्चता स्थापित हुई।
- आर्थिक: औद्योगिक भारत का पतन हुआ; देश 'कच्चा माल आपूर्तिकर्ता' बन गया।
- सामाजिक: पारंपरिक समाजिक ढाँचा कमजोर हुआ, परंतु आधुनिक शिक्षा और सुधार आंदोलनों का जन्म हुआ।
- सांस्कृतिक: भारतीय सभ्यता पर पाश्चात्य प्रभाव पड़ा, जिसने नवजागरण को जन्म दिया।

निष्कर्ष / Conclusion

1757 से 1857 का काल भारत के इतिहास में **परिवर्तन और संक्रमण का युग** था। ब्रिटिश शासन ने भारत को आधुनिक प्रशासनिक व्यवस्था और राजनीतिक एकता तो दी, किंतु इसके साथ-साथ **आर्थिक शोषण, सामाजिक असमानता और दासता** की नींव भी रखी। यही विरोधाभास आगे चलकर भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का आधार बना।

02.सहायक संधि और विलय का सिद्धांत (Subsidiary Alliance and Doctrine of Lapse)

सहायक संधि (Subsidiary Alliance)

परिचय

- सहायक संधि प्रणाली भारत में ब्रिटिश प्रभुत्व स्थापित करने की सबसे प्रभावशाली नीतियों में से एक थी।
- इस नीति की शुरुआत **लॉर्ड वेलेजली (1798–1805)** ने की थी, जिसका उद्देश्य भारतीय रियासतों को ब्रिटिश सेना के संरक्षण में लाकर उन पर अप्रत्यक्ष नियंत्रण स्थापित करना था।

कारण

1. भारतीय रियासतों के बीच राजनीतिक अस्थिरता और आपसी प्रतिद्वंद्विता थी।
2. ब्रिटिश अपने प्रभाव का विस्तार बिना बड़े युद्ध के करना चाहते थे।
3. मराठों, मैसूर और हैदराबाद जैसी शक्तियों से ब्रिटिश सुरक्षा सुनिश्चित करना आवश्यक था।
4. भारत की राजनीतिक व्यवस्था पर नियंत्रण प्राप्त करने की इच्छा।

उद्देश्य

1. भारतीय शासकों को ब्रिटिशों की अधीनता में लाना।
2. भारत में ब्रिटिश सेना की स्थायी उपस्थिति बनाए रखना।
3. भारत में ब्रिटिश साम्राज्य का विस्तार बिना संघर्ष के करना।
4. भारत के संसाधनों और करों पर अप्रत्यक्ष रूप से अधिकार प्राप्त करना।

महत्व

1. इस नीति के माध्यम से ब्रिटिशों ने बिना युद्ध के कई भारतीय राज्यों पर नियंत्रण प्राप्त कर लिया।
2. ब्रिटिश सेना का खर्च भारतीय राज्यों से वसूला जाने लगा।
3. भारतीय राज्यों की स्वतंत्रता केवल नाम मात्र रह गई, वास्तविक सत्ता ब्रिटिशों के पास चली गई।
4. सहायक संधि ने ब्रिटिशों के लिए एक मजबूत राजनीतिक और सैन्य आधार तैयार किया।

भारत में प्रभाव

1. **राजनीतिक प्रभाव** - भारतीय शासकों की स्वतंत्रता समाप्त हो गई और ब्रिटिश सर्वोच्चता स्थापित हुई।
2. **आर्थिक प्रभाव** - भारतीय राज्यों को ब्रिटिश सेना के रखरखाव का खर्च उठाना पड़ा, जिससे आर्थिक संकट बढ़ा।
3. **सैन्य प्रभाव** - भारतीय शासकों की अपनी सेनाएँ समाप्त कर दी गईं, जिससे वे निर्भर बन गए।
4. **सामाजिक प्रभाव** - इस नीति से जनता में ब्रिटिशों के प्रति असंतोष और विद्रोह की भावना बढ़ी।

निष्कर्ष / Conclusion

- सहायक संधि ब्रिटिशों की "कूटनीति से विजय" की नीति का उत्कृष्ट उदाहरण थी।
- इसने बिना युद्ध के ब्रिटिशों को भारत पर प्रभुत्व स्थापित करने का अवसर दिया।
- हालाँकि इस नीति से ब्रिटिश प्रशासनिक नियंत्रण मजबूत हुआ, परंतु इसने भारतीय असंतोष को भी जन्म दिया, जो आगे चलकर **1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम** का कारण बना।

विलय का सिद्धांत (Doctrine of Lapse)

परिचय

- **विलय का सिद्धांत** भारत में ब्रिटिश साम्राज्य विस्तार की सबसे विवादास्पद नीति थी।
- इस नीति को **लॉर्ड डलहौज़ी (1848–1856)** ने लागू किया था।
- इस सिद्धांत के अनुसार, जिन भारतीय रियासतों के शासक बिना प्राकृतिक उत्तराधिकारी के मर जाते थे, उनकी रियासतें स्वतः ब्रिटिश साम्राज्य में विलय हो जाती थीं।

कारण

1. ब्रिटिश साम्राज्य का क्षेत्रीय विस्तार तेज़ी से बढ़ाना।
2. राजनीतिक अस्थिरता और उत्तराधिकार विवादों का लाभ उठाना।
3. कंपनी की आय और संसाधनों में वृद्धि करना।
4. स्वतंत्र भारतीय रियासतों को समाप्त कर एक केंद्रीकृत शासन स्थापित करना।

उद्देश्य

1. बिना युद्ध किए ब्रिटिश साम्राज्य का विस्तार करना।
2. भारतीय शासकों की राजनीतिक स्वतंत्रता समाप्त करना।
3. उत्तराधिकार के पारंपरिक अधिकार को चुनौती देना।
4. भारत में एकीकृत और प्रभावी प्रशासन स्थापित करना।

महत्व

1. यह नीति ब्रिटिश साम्राज्यवाद का स्पष्ट उदाहरण थी।
2. इस नीति के तहत कई प्रमुख रियासतों का विलय किया गया।
3. ब्रिटिशों ने इसे "प्रशासनिक सुधार" के नाम पर लागू किया, पर वास्तव में यह विस्तारवाद का माध्यम था।
4. इस नीति से ब्रिटिश साम्राज्य की सीमाएँ उत्तर और मध्य भारत तक फैल गईं।

भारत में इसका प्रभाव इससे बंगाल, बिहार और उड़ीसा ब्रिटिश प्रशासन के अधीन आ गए और ब्रिटिश राजनीतिक सत्ता की शुरुआत हुई।

1. **राजनीतिक प्रभाव** - इस नीति से **सतारा (1848), झाँसी (1854), नागपुर (1854)** और **अवध (1856)** जैसी रियासतों का विलय किया गया। भारतीय शासकों की संप्रभुता समाप्त हो गई।
2. **आर्थिक प्रभाव** - विलय की गई रियासतों के संसाधन और राजस्व ब्रिटिशों के अधीन हो गए।
3. **सामाजिक प्रभाव** - भारतीय जनता में गहरा असंतोष उत्पन्न हुआ क्योंकि यह नीति भारतीय परंपराओं का अपमान करती थी।
4. **राजनैतिक परिणाम** - इस नीति ने 1857 के विद्रोह को भड़काने में निर्णायक भूमिका निभाई।

निष्कर्ष

- **विलय का सिद्धांत** ब्रिटिशों की **कूटनीति के माध्यम से साम्राज्यवाद** की नीति का चरम रूप था।
- इस नीति ने ब्रिटिश साम्राज्य को तो सशक्त किया, लेकिन भारतीय समाज में असंतोष और राष्ट्रवाद की भावना को भी जन्म दिया।
- इसी नीति के कारण रानी लक्ष्मीबाई जैसी वीरांगनाएँ उत्पन्न हुईं जिन्होंने ब्रिटिश शासन के विरुद्ध संघर्ष किया।
- इस प्रकार यह नीति अंततः ब्रिटिश शासन के पतन की पृष्ठभूमि तैयार करने वाली सिद्ध हुई।

03.भारत में ब्रिटिश शासन का आर्थिक प्रभाव

परिचय

ब्रिटिश शासन ने भारत की पारंपरिक आर्थिक व्यवस्था को तोड़कर उसे एक औपनिवेशिक अर्थव्यवस्था में परिवर्तित कर दिया। 1757 की प्लासी की लड़ाई के बाद ईस्ट इंडिया कंपनी ने भारत पर नियंत्रण स्थापित किया और अपने हितों के अनुसार नीतियाँ बनाईं। इसका प्रमुख उद्देश्य भारत को कच्चे माल का स्रोत और ब्रिटिश उत्पादों के बाजार के रूप में प्रयोग करना था।

कारण

1. **औद्योगिक क्रांति का प्रभाव:** इंग्लैंड की औद्योगिक क्रांति के बाद ब्रिटिश उद्योगों को कच्चे माल और बाज़ार की आवश्यकता थी, जिसे भारत ने पूरा किया।
2. **व्यापारिक एकाधिकार:** ईस्ट इंडिया कंपनी ने भारत के विदेशी व्यापार पर एकाधिकार स्थापित किया, जिससे भारतीय व्यापारी और कारीगर नष्ट हो गए।
3. **भूमि राजस्व प्रणाली:** स्थायी बंदोबस्त, रैयतवारी और महालवारी व्यवस्थाओं ने किसानों पर कर का अत्यधिक बोझ डाला।
4. **कच्चा माल और तैयार वस्तुएँ:** भारत से कपास, जूट, नील, और अफीम जैसे कच्चे माल इंग्लैंड भेजे गए, और तैयार वस्तुएँ भारत में बेची गईं।

उद्देश्य

1. भारत को ब्रिटिश उद्योगों के लिए **कच्चे माल का स्रोत** बनाना।
2. भारत को **ब्रिटिश उत्पादों के बाजार** के रूप में विकसित करना।
3. **राजस्व और लाभ में वृद्धि** कर ब्रिटिश पूंजीपतियों को अधिक लाभ देना।
4. भारत को **आर्थिक रूप से निर्भर** उपनिवेश बनाना।

महत्व - ब्रिटिश शासन के परिणामस्वरूप भारत आत्मनिर्भर अर्थव्यवस्था से निर्भर उपनिवेश में परिवर्तित हो गया। पारंपरिक उद्योगों का विनाश हुआ, ग्रामीण निर्धनता बढ़ी, और शोषण की नई व्यवस्था स्थापित हुई।